शिवनारायण गौर

# महेश का साँप

महेश को साँप पकड़ने और पालने का बहुत शौक था। इस शौक के चलते उसका घर में परिवार के साथ रहना मुश्किल होता था। इसीलिए उसने अपना एक अलग घर बनाया। पत्तों की छत और लकड़ी के ढाँचे वाला घर। उसके इस घर में होते थे छोटे-बड़े कई तरह के साँप और उसकी एक खटिया। बस यही थी महेश की दुनिया।

साँपों को रखने के लिए महेश ने बढ़िया व्यवस्था की थी। उसने अपनी खटिया के चारों तरफ कुछ मटके रखे थे। इन मटकों में कई छेद हुआ करते थे। जिससे कि उनमें हवा अच्छी तरह से जा सके। मटके के मुँह पर वह एक बड़ा-सा दिया ढँक देता था। बस यही साँपों का घर था। हर मटके में एक साँप रखा होता। करीब बीस ऐसे मटके होंगे जिनमें महेश ने साँप रखे थे। लोगों के लिए उसका यह झोपड़ीनुमा घर एक संग्रहालय था। आसपास के कई गाँवों के लोग उसे अच्छी तरह से जानते थे।

महेश मेरे साथ ग्यारहवीं और बारहवीं दो साल तक साथ पढ़ा। उन दो सालों में करीब पाँच-छह बार उसके घर भी जाना हुआ। ग्यारहवीं की पढ़ाई के लिए महेश पास के कस्बे बानापुरा जाता था। उसके पास एक काले रंग की राजदूत मोटरसाइकिल थी। इसी गाड़ी से वो स्कूल आता-जाता।

महेश घर में पाले बीसेक साँपों में से किसी एक को लेकर ही घर से निकलता। साँप, हर दिन नया होता था। हर साँप को बाहर घूमने का मौका मिले इस बात का महेश ध्यान रखता था। साँप रखने के लिए उसके पास कुछ नहीं था। वह कभी साँप को गाड़ी की डिग्गी में रखता तो कभी अपने शर्ट के अन्दर रख लेता। एक बार वो साँप को स्कूल ले आया। फिज़िक्स का पीरियड चल रहा था। अग्रवाल सर क्लास ले रहे थे। महेश आगे से दूसरी बेंच पर अकेला बैठा था। उसके पास साँप रहने के डर से सभी उसके पास बैठने से हिचकते औऱ डरते। जब वह देर से स्कूल आता और उसे किसी के साथ बैठना होता तो साथ वाला उठकर अलग बैठ जाता। कई बार शिक्षक ज़िद करके उसके पास बैठा देते तो साथ वाला जैसे-तैसे डरे-सहमे पीरियड खत्म होते ही अपनी जगह बदल देता।

उस दिन अग्रवाल जी के पीरियड में भी यही हुआ। महेश के पास एक लड़के को बैठा दिया गया। करीब पन्द्रह मिनिट बाद महेश के इधर-उधर खिसकने के चक्कर में साँप बाहर निकल गया। पूरी क्लास में हल्ला होने लगा। लड़के बाहर भागने लगे। महेश साँप को पकड़ने के लिए कक्षा में दौड़ा। अग्रवाल जी उस पर चिल्लाए। सारे शिक्षक उस पर नाराज़ हुए। कुछ को उसे देखकर आश्चर्य भी हो रहा था। स्कूल में बच्चों के लिए ये घटना सामान्य थी क्योंकि वे तो जानते थे कि महेश साँपों का प्रेमी है।

ऐसा ही एक वाक्या उसके स्कूल से घर जाते वक्त का भी है। एक बार महेश स्कूल से घर जा रहा था। साँप उसके शर्ट और बनियान के अन्दर था। उसके साथ कोई पीछे बैठकर जाने वाला था। सुरक्षा की दृष्टि से महेश ने साँप को गाड़ी की डिग्गी में रखना उचित समझा। उसने साँप को गाड़ी की डिग्गी में रखा। डिग्गी लगाई। जब चलने लगा तो उसे लगा कि किताब को भी डिग्गी में ही डाल दे। किताब डालने के लिए डिग्गी खोली तो उसने देखा कि डिग्गी में साँप नहीं है। फिर क्या था महेश साँप को ढूँढने में लग गया। आसपास हर जगह देखा लेकिन साँप कहीं नज़र नहीं आया। स्कूल के बच्चे में डर गए। हर किसी की आँखें बस साँप को ही ढूँढ रहीं थीं। महेश फिर से मोटरसाइकिल में ही साँप को ढूँढने लगा। थोड़ी देर बाद गाड़ी की सीट के नीचे बैठा साँप महेश को मिल गया। उसने उसे वहाँ से निकाला और डिग्गी में डालकर चला गया। महेश के साँपों के ऐसे कई सारे किस्से हैं।